भाषा माधुरी

(कक्षा-तीसरी)

प्रकाशन विभाग

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति

चित्रगुप्त मार्ग, नयी दिल्ली-110055

विषय-सूची

क्रम	पाठ	पृष्ठ-संख्या
1	भोलू भुलक्कड़	1
2	चतुर कौवा	4
3	हाथी और चिड़िया	8
4	चींटी ने पाठ पढ़ाया	13
5	बहादुर दोस्त	15
6	घमंडी मक्खी	20
7	दादाजी	27
8	अगर पेड़ भी चलते होते	33
9	गीत का कमाल	37
10	बूझो तो जानें	42
11	चूँ-चूँ की टोपी	44
12	सुबह	50
13	ऐसे थे लाल बहादुर शास्त्री	54
14	सबसे बड़ा मूर्ख	60
15	बुआ का पत्र	65
16	सवाली राम	70

1

(केवल पढ़ने के लिए)

भोलू भुलक्कड़

एक था भोलू भुलक्कड़। बच्चे जब भी उसे देखते, गाने लगते–

अक्कड़ बक्कड़,
भूल भुलक्कड़,
माँगो लोटा,
लाते लक्कड़।

एक दिन की बात है।

रास्ते में दो मुर्गे आपस में लड़ रहे थे।

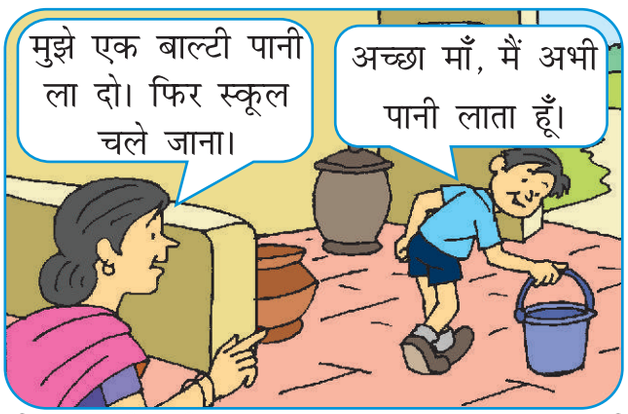

भोलू पानी की बात भूल गया। वह तमाशा देखने लगा।

तभी स्कूल का घंटा बजा–टन, टन, टन!

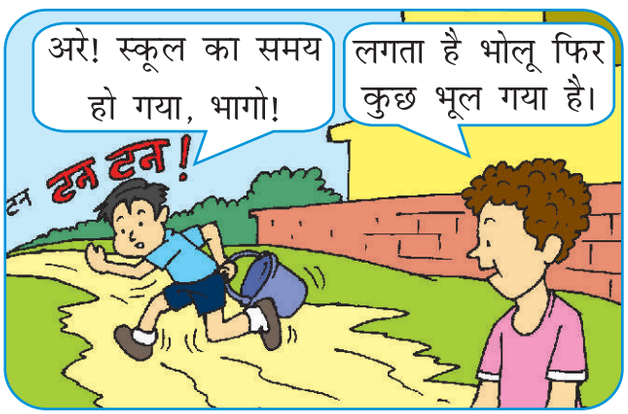

भोलू बाल्टी को बस्ता समझ स्कूल की ओर भागा।

भोलू को देख सब बच्चे हँसने लगे। वे एक साथ बोले–भोलू भुलक्कड़, खा गए क्यों चक्कर!

एक बार माँ ने भोलू को एक काम करने के लिए कहा।

भोलू मुँडेर पर चढ़ा तो उसने देखा।

भोलू भी चिड़िया की तरह अपनी बाँहों को पंख की तरह हिलाने लगा। वह धम्म से ज़मीन पर गिर गया।

भोलू ने वैसा ही किया। माँ ने उसे चाची के घर से पालक लाने भेजा। भोलू ने तुरंत अपनी कमीज़ में गाँठ लगाई। भोलू गाँठ पर हाथ रखे जल्दी-जल्दी चल दिया।

भोलू आम तोड़ने लगा।

तभी उसका हाथ कमीज़ की गाँठ पर जा पड़ा।

शिक्षण-संकेत–चित्रकथा के प्रत्येक चित्र पर ध्यान दिलाते हुए बातचीत कीजिए, जैसे–भोलू को सब क्या कहकर चिढ़ाते थे? क्या तुम्हें भी कोई कुछ कहकर चिढ़ाता है? भोलू की माँ ने भोलू से क्या मँगवाया? क्या घर में तुमसे भी कोई कुछ सामान मँगवाता है?

ज़मीन के नीचे और ज़मीन के ऊपर उगने वाली सब्ज़ियों के बारे में बातचीत कीजिए। साथ ही उनकी पसंद की सब्ज़ियों, फलों पर भी चर्चा कीजिए।

2

चतुर कौवा

बड़ी प्यास से मारा-मारा,
भटक रहा कौवा बेचारा।
गाँव-गाँव में नगर-नगर में,
पानी ढूँढ न पाया हारा।

सहसा एक घड़ा जो देखा,
पर पानी था थोड़ा उसमें।
कंकड़-कंकड़ चुनकर कौवा,
लगा फेंकने बीच घड़े में।

घड़े की गरदन तक जब पानी,
पहुँचा तब **निज** प्यास बुझाई।
अक्ल और मेहनत के बल पर,
किसने नहीं सफलता पाई।

–शशिपाल शर्मा
(बाल मित्र)

शब्दार्थ: **निज**-अपना

अभ्यास

कविता में से

1. कौवा क्यों भटक रहा था?
2. कौवे ने पानी को कहाँ-कहाँ ढूँढा?
3. कौवे ने पानी को ऊपर लाने के लिए क्या किया?
4. कौवे को सफलता कैसे मिली?

बातचीत के लिए

1. किन-किन कामों के लिए पानी की ज़रूरत होती है?
2. पानी को बचाने के लिए आप क्या-क्या करते हैं?
3. जब आपको प्यास लगती है तो आप क्या-क्या पीकर अपनी प्यास बुझाते हैं?

आपकी कल्पना

1. अगर कौवे को आस-पास एक स्ट्रॉ या पाइप मिल जाता तो वह क्या करता? चर्चा कीजिए।
2. अगर आप कौवे की जगह होते तो क्या करते?

भाषा की बात

1. कविता में से जोड़े वाले शब्द छाँटकर लिखिए–

नगर-नगर ....

2. अगर कविता में कौवे की जगह 'चिड़िया' होती तो कविता की पंक्तियों में क्या बदलाव आता?

बड़ी प्यास से .....

भटक .....

गाँव-गाँव में नगर-नगर में

.....

3. **नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को पूरा कीजिए–**

बहुत भूख से .....,

भटक रही थी .....।

गाँव-गाँव में .....,

..... न ढूँढ पाई, हारी।

अचानक उसने देखा .....,

पर वह भी बिलकुल .....।

..... खाकर भूख .....,

..... से वह फूली न .....।

गली-गली में
भोजन
रोटी का टुकड़ा
इधर-उधर
रूखा-सूखा
बेचैन थी वह,
उसे ही, मिटाई
खुशी, समाई

पानी कहाँ-कहाँ?

1. **हमें पानी अनेक स्रोतों से मिलता है। जिन स्रोतों से हमें पानी मिलता है, उन पर सही (✓) का निशान लगाइए–**

☐

☐

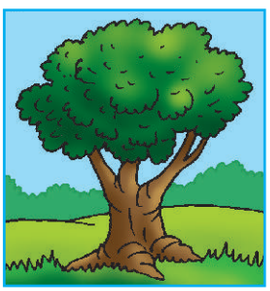

☐

☐

2. शब्द-जाल में जल (पानी) स्रोतों को ढूँढकर लिखिए–

ब	र	सा	त	×	कु
न	ल	ग	×	झी	आँ
×	झ	र	ना	ल	×
ता	ला	ब	×	न	दी

(क) ..... (ख) .....

(ग) ..... (घ) .....

(ङ) ..... (च) .....

(छ) ..... (ज) .....

जीवन मूल्य

कौवा पानी के लिए इधर-उधर भटका और कोशिश करके वह अपनी प्यास बुझा सका।

- क्या आप भी समस्याएँ आने पर उनका हल ढूँढ सकते हैं?
- आप कौवे की सहायता किस प्रकार करते?

कुछ करने के लिए

एक गिलास पानी लीजिए, उसमें चुटकी-भर नमक और दो चम्मच चीनी घोल लें। जब उसमें चीनी-नमक अच्छी तरह से घुल जाए तब उसमें आधा कटा हुआ नींबू निचोड़ दें। उसे ठंडा करने के लिए दो-तीन टुकड़े बर्फ़ के डालें और पीकर आनंद ले।

3 हाथी और चिड़िया

एक हाथी और एक चिड़िया में झगड़ा हो गया। हुआ यूँ कि एक दिन चिड़िया अपने लिए एक नया घोंसला बना रही थी। यहाँ-वहाँ से तिनका इकट्ठे कर रही थी। एक बार में वह एक ही तिनका उठा पाती थी। वह तिनका पकड़ती, उड़ती और पेड़ की डाली पर रख आती। उसे बार-बार यह करते देख हाथी को हँसी आ गई। वह चिड़िया पर हँसता हुआ बोला-''बेचारी, इतनी छोटी, इतनी कमज़ोर है कि एक से

ज़्यादा तिनका उठा ही नहीं पाती। मुझे यदि ऐसे तिनके उठाने पड़ें तो मैं हज़ारों-लाखों तिनके एक बार में उठा सकता हूँ।'' घोंसला बनाने के लिए चिड़िया ने धरती पर गिरा पत्ता उठाना चाहा। पत्ता कुछ बड़ा था। उससे उठ ही नहीं रहा था। बार-बार उसके मुँह से पत्ता ज़मीन पर गिर जाता। यह देखकर तो हाथी को खूब हँसी आई। हँसते-हँसते बोला– ''कुदरत ने तुम्हें बनाने में खूब कंजूसी दिखाई है। एक पत्ता तक तुमसे नहीं उठता है। मैं चाहूँ तो इस पूरे पेड़ को उखाड़कर उठा सकता हूँ। क्या तुम ऐसा कर सकती हो?''

''मैं ऐसा क्यों करूँगी? यदि पेड़ को उखाड़ा जाए तो उस पर रहने वाले कितने ही पक्षियों के घर **उजड़** जाएँगे। एक पेड़ को बनने में कम-से-कम दस वर्ष लग जाते हैं।'' हाथी को गुस्सा आ गया। वह बोला– ''चिड़िया की बच्ची, तुम बहुत ज़्यादा चीं-चीं करती हो। तुमने तिनके और पत्ता उठाकर मेरे सामने अपनी ताकत दिखाई है। मैं भी अपनी ताकत दिखाऊँगा।''

शब्दार्थ: उजड़ जाना-खराब होना, नष्ट होना

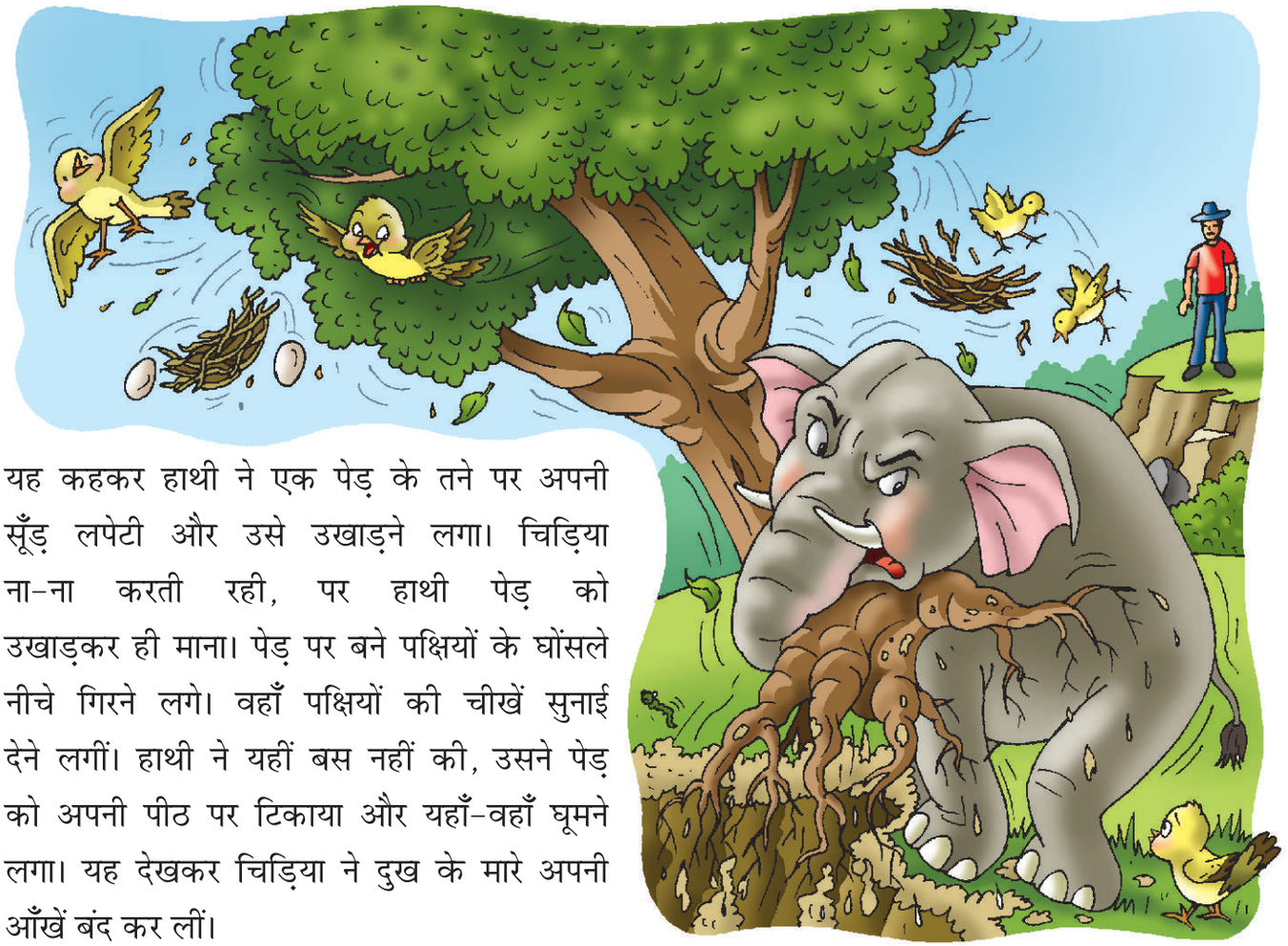

यह कहकर हाथी ने एक पेड़ के तने पर अपनी सूँड़ लपेटी और उसे उखाड़ने लगा। चिड़िया ना-ना करती रही, पर हाथी पेड़ को उखाड़कर ही माना। पेड़ पर बने पक्षियों के घोंसले नीचे गिरने लगे। वहाँ पक्षियों की चीखें सुनाई देने लगीं। हाथी ने यहीं बस नहीं की, उसने पेड़ को अपनी पीठ पर टिकाया और यहाँ-वहाँ घूमने लगा। यह देखकर चिड़िया ने दुख के मारे अपनी आँखें बंद कर लीं।

पर वहाँ एक आदमी भी था। आदमी ने अपनी आँखें बंद नहीं की थीं। वह हाथी की ताकत देखकर पहले तो हैरान हुआ। फिर उसकी ताकत का उपयोग सोचकर प्रसन्न हो गया। अब आदमी ने और भी कई हाथियों को **वश** में किया और उन्हें सामान ढोने के काम पर लगा दिया। सभी हाथी उस पहले हाथी पर नाराज़ होने लगे। पहला हाथी बोला–"मुझे भी इसका **अफ़सोस** है।"

—गोविंद शर्मा

शब्दार्थ: वश-काबू में रखना, **अफ़सोस**-दुख, पछतावा

अभ्यास

कहानी में से

1. चिड़िया ने घोंसला बनाने के लिए क्या किया?
2. चिड़िया पत्ता क्यों नहीं उठा पा रही थी?
3. हाथी की ताकत को देखकर आदमी ने क्या किया?

बातचीत के लिए

1. चिड़िया को अपनी आँखें क्यों बंद करनी पड़ीं?
2. जब आदमी ने हाथी से बोझा उठवाया होगा तो हाथी के मन में क्या-क्या आया होगा?
3. चिड़िया ने कहा कि एक पेड़ को बनाने में कम-से-कम दस वर्ष लग जाते हैं। बताइए, इन्हें बनने में कितना समय लगता होगा–
   - मधुमक्खी का छत्ता
   - चिड़िया का घोंसला
   - आम का बाग

आपकी कल्पना

1. हाथी पेड़ उखाड़कर यहाँ-वहाँ घूमने लगा। कल्पना कीजिए कि पेड़ उखड़ने से किस-किसको नुकसान पहुँचा होगा।
2. हाथी को ऐसा करने से कौन रोक सकता था और कैसे?
3. हाथी को क्या-क्या सामान ढोना पड़ा होगा?

कुछ हल्का और कुछ भारी

आपको कौन-कौन सी चीज़ें हल्की लगती हैं, और कौन-कौन सी भारी? जैसे चिड़िया को पत्ता भारी लगा और हाथी को हल्का।

हल्का	भारी
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

भाषा की बात

1. **सही शब्द से वाक्य पूरे कीजिए–**

   (क) उसने पलक को आवाज़ देकर.....। (बुलाया/बुला दिया)

   (ख) गप्पू हाथी ने पेड़.....। (उखाड़ लिया/उखाड़ा)

2. **पाठ में से चंद्रबिंदु (ँ) वाले कोई तीन शब्द चुनकर लिखिए–**

   .....

   .....

   .....

3. **'चिड़िया' और 'हाथी' से जुड़े हुए चार-चार शब्द छाँटकर लिखिए–**

   छोटी, पंख, बड़ा, पूँछ, घोंसला, सूँड़, तिनका, सामान

चिड़िया		हाथी	
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

जीवन मूल्य

1. कहानी में हाथी ने पेड़ उखाड़े। कक्षा में चर्चा कीजिए कि–
   - क्या हाथी को ऐसा करना चाहिए था? क्यों?
   - पेड़ उखाड़ने से क्या-क्या नुकसान हो सकते हैं?
   - अपनी धरती को हरी-भरी बनाने के लिए आप क्या करेंगे?
2. असहाय व्यक्तियों का मज़ाक उड़ाना बुरी बात है। इस पाठ में हाथी ने अपनी गलती मान ली। क्या हमें भी गलती करने पर माफ़ी माँग लेनी चाहिए या नहीं?
3. अगर आपसे कोई गलती हो जाए तो क्या आप माफ़ी माँगेंगे, क्यों?

कुछ करने के लिए

दिए गए निर्देशों के अनुसार मुखौटा बनाइए–

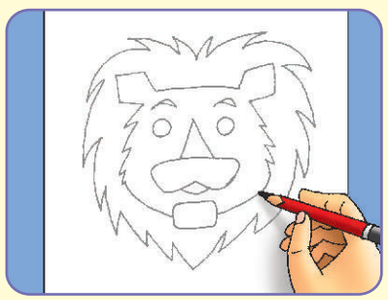

1. शेर के मुँह की आकृति बनाइए ।

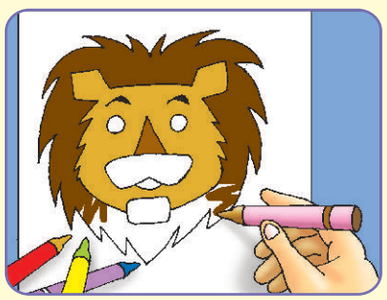

2. रंग भरिए।

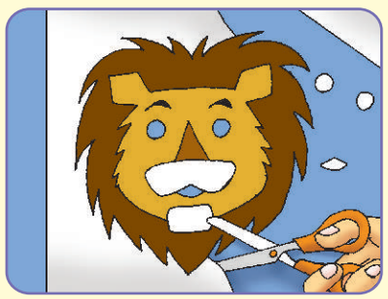

3. अब बाहरी लाइन से काट लीजिए।

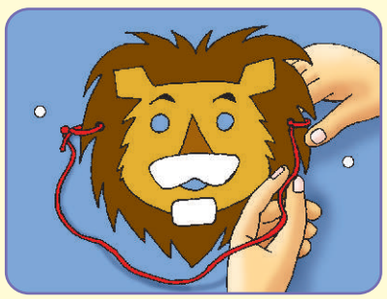

4. दोनों किनारों पर छेद कीजिए और धागा बाँधिए।

आप इस तरह हाथी, गाय, बिल्ली, कुत्ते आदि के मुखौटे भी बना सकते हैं।

(केवल पढ़ने के लिए)

4

चींटी ने पाठ पढ़ाया

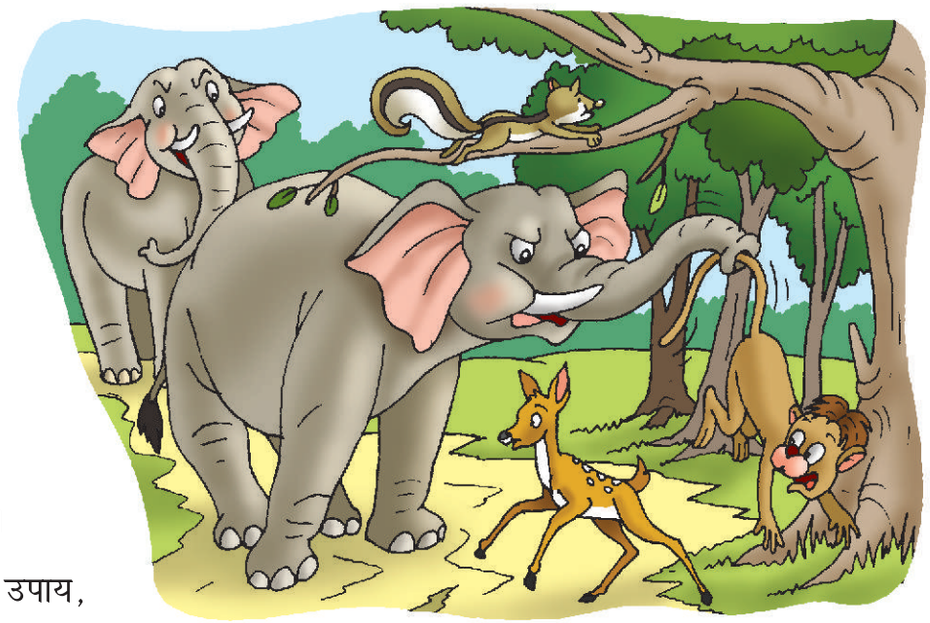

गप्पू हाथी थे बड़े **उत्पाती**,
वैसे ही थे उनके साथी।
ये जंगल में करते थे मनमानी,
चलते थे जैसे राजा **अभिमानी**।
जंगल के जानवर थे परेशान,
शेर महाराज भी रहते थे हैरान।
इक दिन राजा ने सभा बुलाई,
वहाँ आए पशुओं को बात बताई।
सबक सिखाने का मिलकर करो उपाय,
चींटी बोली, काम हमें यह **सौंपा** जाए।

अरे वाह! छोटे मुँह बड़ी बात,
देखो रे देखो चींटी की **बिसात**।
चींटी से नहीं सही गई **कटु** वाणी,
उसने कुछ करने की मन में ठानी।
वह अक्ल के घोड़े दौड़ा रही थी,
बुद्धि के चाबुक चला रही थी।
चलते-चलते वह घर पर आई,
अपनी सेना को सारी कथा सुनाई।
जंगल में बढ़ने लगीं चींटियाँ सारी,
उनके बल से काँप रही थी धरती भारी।

शब्दार्थः **उत्पाती**-नुकसान पहुँचाने वाला, **अभिमानी**-घमंडी, **सौंपा**-किसी दूसरे व्यक्ति पर भरोसा करके काम देना, **बिसात**-क्षमता, योग्यता, **कटु**-कड़वा, कठोर

वहाँ पहुँच उन्होंने गप्पू को ललकारा,
उसकी हरकत पर उसे खूब **धिक्कारा**।
गप्पू बोला, जो भी है सामने आओ,
अपना काला मुँह मुझे दिखाओ।
यह सुन चींटी ने एक तमाचा मारा,
हल्का नहीं, वह था बहुत **करारा**।
उसने दमादम गप्पू पर लातें बरसाईं,
गप्पू रोया, पर उसे दया नहीं आई।

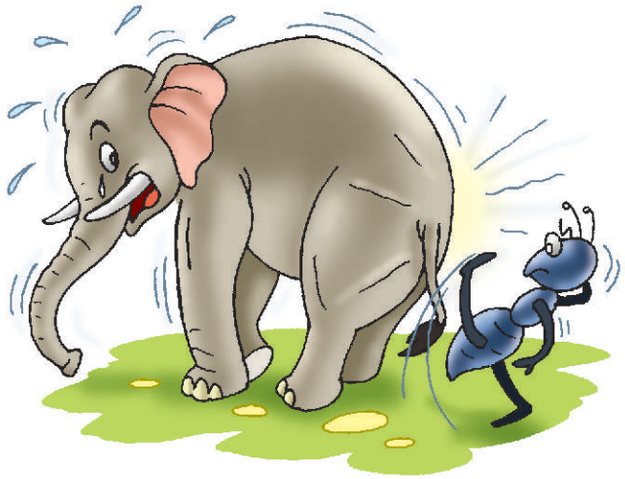

फिर धीमे-धीमे सूँड़ में **सेंध** लगाई,
डंक मार-मारकर उसकी सूँड़ सुजाई।
गप्पू करता था, दर्द से हाय! भैया,
मुझे चींटी से बचाओ मेरी मैया।
बोली–''अब नहीं करना जंगल में **उत्पात,**
लगा अड़ंगी गिरा दूँगी, अगर किया उत्पात।''
कान पकड़ वह बोला–''गलती नहीं दोहराऊँगा,
नहीं करना उत्पात अपने बच्चों को भी समझाऊँगा।''

शिक्षण संकेतः-

शिक्षक कविता को आनंद लेकर पढ़ाएँ, बच्चों को कविता गाने, पढ़ने का अवसर दें। यह कविता मज़े से पढ़ने के लिए है। कविता गाने-पढ़ने के बाद बच्चों से इन बिंदुओं पर बातचीत की जा सकती है, जैसे–

- शेर ने सबकी सभा क्यों बुलाई?
- चींटी ने हाथी को सबक कैसे सिखाया?
- क्या चींटी सचमुच हाथी को अड़ंगी लगाकर गिरा सकती है?
- हमें दूसरों को परेशान क्यों नहीं करना चाहिए? आदि।

शब्दार्थः **धिक्कारा**-बुरा-भला कहना, **करारा**-कड़ा, तेज़, **सेंध**-घुसने का रास्ता, **उत्पात**-ऊधम, शैतानी